Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

APF–2001

M.A. (Final) Examination, 2022

HINDI

Paper - I

(गद्य साहित्य)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द) :

   (i) आचार्य शुक्ल ने श्रद्धा के कौनसे तीन प्रकार बताए हैं ?

   (ii) "'सिक्का बदल गया' में शाहनी के चरित्र के माध्यम से लेखक ने विभाजन की पीड़ा को अभिव्यक्त किया है।" कथन स्पष्ट कीजिए।

(iii) 'पिता' कहानी के आधार पर पिता की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए।

(iv) 'शेखर : एक जीवनी' भाग 1 कितने खंडों में विभक्त है ? नामोल्लेख कीजिए।

(v) 'शेखर : एक जीवनी' उपन्यास की शिल्पगत विशेषताओं पर टिप्पणी लिखिए।

(vi) अज्ञेय की निबन्ध शैली पर प्रकाश डालिए।

(vii) 'लहरों के राजहंस' नाटक रंगमंचीय दृष्टि से कहाँ तक सफल है ? अपने विचार व्यक्त कीजिए।

(viii) सुंदरी यशोधरा को किस बात के लिए दोषी मानती है और क्यों ?

(ix) संस्मरण और रेखाचित्र में कोई **दो** प्रमुख अंतर स्पष्ट कीजिए।

(x) महादेवी की रचना 'बिन्दा' की मूल संवेदना को अभिव्यक्त कीजिए।

खण्ड–ब

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** की व्याख्या कीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द) :

2. लोग प्रायः भूल ही जाते हैं उनके जीवन क्या रहे। तभी समाज अपने लिए यह सम्भव पाता है कि विधान करे, 'योग्य माता-पिता वे हैं, जो बच्चों को वयः प्राप्त लोगों की तरह रहना सिखाएँ।' इस एक भावना ने यौवन का जितना अपघात किया है, उतना शायद ही किसी और कानून या प्रथा या विधान ने किया हो। अपनी सन्तान को वयः प्राप्त लोगों-सा बर्ताव सिखाते समय वे भूल जाते हैं कि उनके अपने जीवन क्या थे; कि वे भी कभी बच्चे थे, उनमें भी बच्चों की निष्पाप शरारत थी; कि बच्चों का कोई दोष है तो यही है कि वे इतने भोले, इतने अछूत, इतने स्वच्छ, निष्पाप हैं कि वे अपने माता-पिता को अपने कपट पर लज्जित कर देते हैं, यदि माता-पिता अपना बचपन याद भर रख सकते तो उनकी सन्तान और वे स्वयं, कितने सुखी होते।

3. उपासना जब हद तक पहुँचती है, तब उपास्य ठीक उतना ही मानवीय होता है जितना कि उपासक-बल्कि उपासक के लिए तो, वह उसी का एक प्रक्षेपण मात्र रह जाता है जो उसके भीतर न होकर, बिलकुल घटनावश उसके सामने हो गया है और इस सामने होने से, जाने कैसे अस्पृश्य हो गया है, जैसे शीशे में अपना प्रतिबिम्ब, पर साथ ही विस्तीर्ण और अबाध भी हो गया है.....

4. मेरे घावों को देखकर इतना अनुमान तुम्हें हो गया होगा कि तथागत के पास से मैं सीधा यहाँ नहीं आया। इस बीच वन में जाकर मैंने एक व्याघ्र से युद्ध किया, परन्तु उसके बाद भी सीधा यहाँ नहीं आया। चाहता था कुछ समय बिल्कुल अकेला रहूँ—इतना कि किसी का आभास तक मेरे पास न हो। परन्तु वह इच्छा पूरी नहीं हुई, क्योंकि एक व्यक्ति निरन्तर छाया की तरह मेरे साथ रहा। इस छाया से मैं बच भी जाता, परन्तु उसके अतिरिक्त और भी कितनी ही छायाएँ मेरे साथ थीं। जो छाया सबसे निकट थी; वह थी तुम....तुम!

5. होता हमेशा यही है। सब मन में तय करते हैं, आगे से पिता को नहीं घेरेंगे। लेकिन थोड़ा समय गुजरने के बाद फिर लोगों का मन पिता के लिए उमड़ने लगता है। लोग मौका ढूँढ़ने लगते हैं, पिता को किसी प्रकार अपने साथ की सुविधाओं में थोड़ा-बहुत शामिल कर सकें। पर ऐसा नहीं हो पाता। वह सोचने लगा, भूखे के सामने खाते समय होने वाली व्यथा—सरीखी किसी स्थिति में हम रहा करते हैं। यद्यपि अपना खाना हम कभी स्थगित नहीं करते, फिर भी पिता की असंपृक्ति के कारण व्याकुल और अधीर तो हैं ही।

6. अब भी मैं और कुछ पूछना चाहता था क्योंकि मेरा मन कह रहा था कि मेरा काम अभी खत्म नहीं हुआ है। मगर मैं यह भी देख रहा था कि उस लड़की की व्यथा कितनी सादी थी, मामूली थी, कोई खास बात थी ही नहीं। मैं संवेदना दे सकता था तो अधिक से अधिक देना चाहता था, इसलिए मेरे मुँह से निकला, ''घबराओ नहीं ठीक हो जाएगी लड़की।'' अब सोचता हूँ कि बजाय इसके अगर मैं पूछता, आज कौनसा दिन है, तो कोई फ़र्क न पड़ता।

7. अशोक का वृक्ष जितना भी मनोहर हो, जितना भी रहस्यमय हो, जितना भी अलंकारमय हो, परन्तु है वह उस विशाल सामन्त-सभ्यता की परिष्कृत रुचि का प्रतीक, जो साधारण प्रजा के परिश्रमों पर पली थी, उसके रक्त के स-सार कणों को खाकर बड़ी हुई थी और लाखों-करोड़ों की उपेक्षा से समृद्ध हुई थी। वे सामन्त उखड़ गये, समाज ढह गये, और मदनोत्सव की धूमधाम भी मिट गयी। संतान-कामिनियों को गन्धर्वों से अधिक शक्तिशाली देवताओं का वरदान मिलने लगा—पीरों ने भूत-भैरवों ने, काली-दुर्गा ने यक्षों की इज्जत घटा दी। दुनिया अपने रास्ते चली गयी। अशोक पीछे छूट गया।

8. वास्तव में जीवन सौन्दर्य की आत्मा है; पर वह सामन्जस्य की रेखाओं में जितनी मूर्तिमत्ता पाता है, उतनी विषमता में नहीं। जैसे-जैसे हम बाह्य रूपों की विविधता में उलझते जाते हैं, वैसे-वैसे उनके मूलगत जीवन को भूलते जाते हैं। बालक स्थूल विविधता से विशेष परिचित नहीं होता, इसी से वह केवल जीवन को पहचानता है। जहाँ जीवन से स्नेह-सद्भाव की किरणें फूटती जान पड़ती हैं, वहाँ वह व्यक्ति विषम रेखाओं की उपेक्षा कर डालता है और जहाँ द्वेष, घृणा आदि के धूम से जीवन ढका रहता है, वहाँ पर बाह्य सामंजस्य को भी ग्रहण नहीं करता।

खण्ड–स

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द) :

9. 'शेखर : एक जीवनी' एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। इस कथन को विस्तारपूर्वक समझाइए।

10. 'गदल' कहानी की तात्विक समीक्षा कीजिए एवं इसकी नायिका 'गदल' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

11. रेखाचित्र के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालते हुए रेखाचित्र लेखन में महादेवी के योगदान को बताइए।

12. 'साहित्य के दृष्टिकोण' निबन्ध का मूल भाव और उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।